॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

जनवरी 2020 वर्ष 24, अंक 01 ❑ दूरभाष (दिल्ली): 23360059, 23362110 (टंकारा): 02822-287756 ❑ विक्रमी सम्वत् 2075-76 ❑ कुल पृष्ठ 16
ई-मेल:tankarasamachar@gmail.com ❑ एक प्रति का मूल्य 20/-रुपये ❑ वार्षिक शुल्क 200 रुपये ❑ आजीवन 1000/-रूपये

यह था महर्षि का असली स्वरूप

❑ खुशहाल चन्द्र आर्य

ऋषि दयानन्द दया, करूणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाईयाँ, जहर देने वालों को क्षमादान और विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी भी अपने सुख-दु:ख के लिए न चिन्तित हुए और न रोये। मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, ढोंग, पाखण्ड, गुरुडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिए सम्पर्क करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी-भारत पुन: जगतगुरु के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई-मनगढ़त पोपलीलाएँ कैसे दूर हों। इन झूठे पाखण्डी गुरुओं, महन्तो, सन्तों आदि इन भोली-भाली जनता को बहकाने, ठगने, अज्ञानता की ओर जाने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे? देश सत्यज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर, कैसे दु:ख, दैन्य, निर्धनता, रोग-शोक, पशुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा रही है-

इक हूक सी दिल में उठती है, इक दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं, जब सारा आलम सोता है॥

ऋषि जी सदा देश के दुर्भाग्य, दुर्गति, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये। जो देश कभी सुख-शान्ति, मानवता और धन-धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन-दीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के विमारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा-एक स्त्री मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ट हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया, रोते बिलखते हए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि जी हम हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके। करूणा स्वर से बोले-हाय! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर के कफन भी नहीं जुड़ता? उनकी आँखों से आंसुओं की धारा अविटल बहने लगी। कभी यह भारत धन-धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा-पूरा था। सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय, दशा है? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घण्टों चिन्तन मनन करते रहे।

महर्षि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया, उन्होंने वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले, उधर ही वैचारिक क्रान्ति सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। उनके राज महाराज, धनी-मानी उनके शिष्य बन गये। बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित रहे। उन्होंने दुनियां को झुकाया, स्वयं नहीं झुके। दूसरों को बदला, स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में अद्‌भुत चुम्बकीय आकर्षक शक्ति थी। घोर-शुत्र भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्य गुणों के खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श शिक्षक और व जीवन दायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन सम्भाले और ऊपर उठाए। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन-दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है।

भोगी, विलासी, दुर्व्यसनों में फंसे मुन्शीराम के जीवन को ऋषि जी के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुंशीराम से श्रद्धानन्द बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश-धर्म-जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किये हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म जाति आदि की सेवा का पाठ व भिक्षा लेना चाहे तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन नहीं मिलेगा।

मुंशीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन भी बुराईयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभी में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया, भजन बड़ा ही मधुर था। सहज ही ऋषि जी की सन्यवाणी निकली-अमीचन्द! तुम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फंसे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन में आग लगा दी। भाव-विचार और जीवन बदल गया। बाद में उन्हीं अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार एवं प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में अद्‌भुत जादू था, जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था।

मृत्यु का अन्तिम दृश्य-ऋषि जी की सहन शक्ति, आस्तकता, प्रभु भक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को

१ जनवरी भारतीय वैदिक नववर्ष नहीं है।

(शेष पृष्ठ 14 पर)

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पूनम की पाठशाला

दिनांक 06 दिसम्बर 2019 को **आर्य समाज वसंत विहार, दिल्ली एवम् सुरजभान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल वसंत विहार, दिल्ली** के संयुक्त तत्वावधान में पूनम की पाठशाला का आयोजन किया गया। जैसा कि नाम से ही विदित है कि कक्षा के आचार्य पदम्श्री डॉ. पूनम सूरी जी, प्रधान डी.ए.वी. एवम् प्रादेशिक सभा ही थे। इस अवसर पर दिल्ली एवम् निकटवर्ती क्षेत्रों से डी.ए.वी. विद्यालयों के शिक्षक, प्राचार्य, आर्य समाज के विद्वान एवम् विभिन्न आर्य संस्थाओं के अधिकारी महानुभाव उपस्थित थे।

यह एक प्रथम प्रयास था जो कि अत्याधिक सफल रहा और प्रधान जी से आग्रह किया गया कि इस प्रकार की कक्षाएं भारत के विभिन्न प्रांतों एवम् जिलों में आप द्वारा सम्बोधित की जाए। इससे शिक्षकों और प्राचार्यों पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ेगा और वे वैदिक संस्कृति को समझेगें और वेदानुसार आचार्य के दायित्व, आचार्य का महत्व और लक्ष्य क्या होते हैं इसकी जानकारी प्राप्त होगी। प्रधान जी ने अपने उद्बोधन में नैतिक मूल्यों, वैदिक ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने पर बल दिया। जिससे विद्यार्थियां के उज्जवल भविष्य का निर्माण हो सके, मानवता का निर्माण, सत्य के मार्ग को अपनाने, वेद आधारित शिक्षा का विकास करने की बात कही। विद्यार्थियों को ईश्वर के प्रति भक्तिभाव को उत्पन्न करना भी आचार्य/शिक्षक का ही दायित्व है ऐसा कहा। प्रधान जी के वक्तव्य से कुछ एक अंश जो वेदों/सत्यार्थ प्रकाश पर आधारित थे प्रस्तुत कर रहे हैं-

आचार्य कौन- जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ा देवे उसको 'आचार्य' कहते हैं। यह चारों लक्षण वेद में ही गठित होते हैं अन्य किसी धर्म पुस्तक में नहीं। विद्या का उद्देश्य भी सत्य और यथार्थ ज्ञान को प्राप्त करवाना है। इस आधार पर वेदों को ही ऋषि ने विद्यापुस्तक घोषित किया है। जो सब प्रकार की विद्याओं को पढ़ाता अर्थात् यथार्थ ज्ञान प्रदान करता है, वह आचार्च कहलाता है। आचार्य यास्क द्वारा रचित निरूक्त के इस कथन से भी इस उपरोक्त तथ्य की पुष्टि होती है। **''आचार्यः कस्माद् आचारं ग्राहयति, आचिनोति अर्थान्, आचिनोति बुद्धिमिति वा।''** अर्थात् आचार्य उसे कहते हैं जो असत्याचार से छुड़ाकर, सत्याचार का और अनर्थों को छुड़ाकर अर्थों को ग्रहण करा ज्ञान को बढ़ा देता है।

परोपकारी आचार्य कौन- अपने सब सामर्थ्य से दूसरे प्राणियों (विद्यार्थियों) को सुख देने के लिए जो तन, मन, से प्रयत्न करता है वह 'परोपकारी' कहलाता है।

सदाचारी आचार्य कौन-जिसने सत्य का ही आचरण और असत्य का परित्याग किया है उसको सदाचारी कहते हैं।

पुरूषार्थी आचार्य कौन- जो आलस्य छोड़ उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिए मन, शरीर और वाणी से अत्यन्त परिश्रम कर विद्यार्थियों को नैतिकता का पाठ पढ़ाता है।

उपरोक्त कुछ मुख्य बिन्दु प्रधान जी के उद्बोधन में प्राथमिकता से कहे गए। विभिन्न विद्यालयों से आए शिक्षकों ने इस कार्यक्रम की सराहना की तथा भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रमों के आयोजन पर बल देने का आग्रह किया। शिक्षकों ने उनके द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलने का संकल्प भी किया।

स्थानीय संवादाता द्वारा

अ+सफल में ही सफल निहित है।

इस सृष्टि का कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जिसने अपने जीवन में असफलता का सामना न किया हो। कभी निराशा के अंधेरे कुऐं में न डूबा हो। यदि कोई व्यक्ति अभी तक असफल या निराश न हुआ हो तो यह उस व्यक्ति का परम सौभाग्य है लेकिन भविष्य किसने देखा है। जीवन में परिस्थितियाँ एक जैसी कभी नहीं रहतीं। असफलता कभी भी आपके जीवन का दरवाजा खटखटा सकती है।

प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग परिस्थितियों में जन्म लेता है, और लगभग अलग ही परिस्थितियों में पलता बढ़ता है, और अलग ही परिस्थितियों में काम करता है। प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थिति भी दूसरे से भिन्न होती है। परिस्थितियाँ ही मनुष्य के समुचे व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। हमारी ऐसी आस्था है कि विपरीत परिस्थितियाँ व्यक्ति को अपने कर्मो का दण्ड है और अनुकूल परिस्थितियाँ उसके सूकर्मो का पुरस्कार है। इन्हें अच्छी या बुरी परिस्थितियों के नाम से भी सम्बोधित किया जा सकता है। यह दर्शन यहाँ तक तो ठीक है परन्तु जब यह माना और समझा जाने लगता है कि उपरोक्त दण्डों को सहने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है और उन्हें परमपिता परमात्मा का न्याय सहन करना ही पड़ेगा, ऐसी परिस्थितियों में विकास सम्भव नहीं है। दु:ख में जैसे भी हो धैर्य से दिन बिताने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। यह सोच व्यक्ति को निराशावादी भंवर में ले जाती है। इसी परिस्थिति को किसी कवि ने अपने शब्दों में इस प्रकार व्यक्त किया है:-

ए- दिल तुझे कसम है, हिम्मत न हारना।
दिन जिन्दगी के जैसे गुजरें, गुजारना।

कवि ने शब्दों को सुन्दर रूप से जोडा है लेकिन यह कामना मनुष्य को परिस्थितियों का दास बना देती है और यहीं से अति दु:खद अध्याय का प्रारम्भ होता है।

सफलता

- सफलता प्राप्त करना चाहते हो तो अपनी शक्तियों को पहचानो। जीवन में अनेक विघ्न-बाधाएं आती हैं, इनसे संघर्ष करने के लिए आत्मविश्वासी होना चाहिए। -अथर्ववेद 19/13/5
- सफलता कोई रहस्य नहीं है। वह केवल अति परिश्रम चाहती है।
- सफलता का रहस्य विवेक, श्रम, चरित्रबल और व्यावहारिकता-इन चार साधनों में निहित होता है।
- सफलता का रहस्य वेदान्त को व्यवहार में लाना है। व्यावहारिक वेदान्त ही सफलता की कुंजी है।
- उस व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, जो संकल्प कर सकता है और फिर उस पर आचरण कर सकता है, सफलता का यही नियम है।

असफलता

- असफलता केवल यह सिद्ध करती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं हुआ।
- हमारी सबसे बड़ी शान कभी न गिरने में नहीं है, अपितु जब हम गिरें, हर बार उठने में है।
- असफलता निराशा का सूत्र कभी नहीं है, अपितु वह तो नई प्रेरणा है।
- जो लोग सचमुच बुद्धिमान हैं, वे असफलताओं से कभी नहीं घबराते।
- असफलताएं कभी-कभी सफलता का आधार होती हैं। यदि हम अनेक बार भी असफल होते हैं, तो कोई बात नहीं। प्रयत्न करके असफल हो जाने की अपेक्षा प्रयत्न न करना अधिक अपमानजनक है।

जीवन का आध्यात्मिक दृष्टिकोण जहाँ दु:खों को सहने और असफलताओं को धैर्य पूर्ण वहन का आदेश देता है, वहीं मनुष्य को विपरीत परिस्थितियों से भी संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। दुर्भाग्य को दुष्कर्मो का दण्ड मानकर दु:खों के बोझ तो हल्का किया जा सकता है। किसी दार्शनिक ने ऐसी परिस्थिति में धैर्य रखने में कठिनाई अनुभव हो रही हो तो सुझाव दिया है कि किसी स्थानीय अस्पताल में जाकर रोगियों से मिले, उनके दु:खों को सुने, स्वत: ही अपने दु:ख कम लगने लगेंगे, और धैर्य रखने की शक्ति प्राप्त होगी। परन्तु इसका यह अभिप्राय: नहीं कि असफलताओं की मार से निष्क्रिय होकर बैठा जाये। असफलता प्रकृति का अभिन्न और अनिवार्य अंग है। इस से मनुष्य की अन्तर्निहित क्षमता, प्रयुक्त प्रतिभा और निहित योग्यता को उभर कर प्रकट करने का अवसर मिलता है। व्यक्ति का मन और बुद्धि शक्ति और सामर्थ्य के वास्तविक स्रोत होते हैं। मन भावुक भावों का और बुद्धि विचारों का आश्रय स्थल होता है। अगर दु:ख और कठिनाइयाँ आती हैं तो स्वत: ही मानसिक क्रियाशीलता अपना कार्य प्रारम्भ करते हुए उभरती और प्रतिभा के विकास में सहायक बन जाती है। विचार मन के धर्म होते हैं।

मन से उपजे विचारों को स्वतन्त्रता देनी होगी, स्वतन्त्र विचारों से कामनायें उभरती हैं। कामनाओं को स्वतन्त्र मार्ग दीजिए, वह कार्य से परिणत हो जायेगी। कार्यो को स्वतन्त्रता दीजिए वह आदतें बन जायेंगी। आदतें कुछ समय उपरान्त चरित्र के रूप में प्रकट होंगी। यही चरित्र व्यक्ति का निर्माण करता है। इस उपरोक्त पूरी श्रंखला में आप स्वयं केन्द्रीय भूमिका में रहेंगे। क्योंकि उपरोक्त श्रंखला स्वत: नहीं होती। यह प्रक्रिया सीढी का प्रथम सोपान है जिस पर आपको स्वयं ही चढ़ना होता है। यह विद्युत चालित सीढी नहीं है जो आपको स्वयं ही चढ़ा ले जाती है। आपको अपनी योग्यता और क्षमता से विकास स्वयं करना होगा। क्षमतायें बाहर से नहीं बटोरनी पडती, उन्हें अपने भीतर ही उभारना पडता है। उभारने पर यह स्वयं प्रतीत होता है कि वह पहले से ही वहाँ स्थित थी। आपने तो सिर्फ उन पर से आवरण ही हटाया है जो भारी भरकम मार्ग के रोडें आपकी सोच और आपके बीच अवरूद्ध बन कर खडे हैं, उन आलस्य रूपी प्रमाद रोडों को जैसे ही हटा दिया जाता है। अन्दर की शक्तियाँ पूरे वेग से बाहर निकल कर सम्पूर्ण जीवन का काया कल्प कर देती हैं।

इसलिए दु:खद से दु:खद परिस्थितियों में भी संघर्ष करना न छोडें और दु:ख को अपने भाग्य का लेखा न मानते हुए विपरित परिस्थितियों में भी अपने अन्दर की शक्तियों को पहचानते हुए अनुकूल परिस्थितियों की ओर अग्रसर हों।

'नई दुनिया बसाने को,
नये अवसर नहीं आते
यही मिट्टी उभरती,
यही जररें स्वरते है।'

-अजय टंकारावाला

प्रार्थना

❒ कञ्चन आर्या

अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्यवाले मनुष्य के सहाय लेने को 'प्रार्थना' कहते हैं।

प्रार्थना– सामान्य रूप से कोई इच्छा या आवश्यकता होने पर जब कोई मनुष्य बिना कोई परिश्रम किये ही परमेश्वर अथवा किसी भी मनुष्य से सहायता माँगने लगता है, तो उसे ही हम प्रार्थना कह देते हैं।

व्याख्या–महर्षि दयानन्द ने प्रार्थना के लिए निम्नलिखित विशेष बातों का उल्लेख किया है–

'पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त' आदि शब्दों को जोड़कर प्रार्थना के वास्तविक स्वरूप को प्रस्तुत कर दिया हैं। तात्पर्य यह है कि किसी इच्छा या आवश्यकता के होने पर जब हम परमेश्वर अथवा किसी समर्थ मनुष्य से सहायता चाहते हैं, तो उसके लिए पहले स्वयं पूरी तरह से मेहनत या प्रयत्न करना आवश्यक है। बिना मेहनत किये केवल सहायता की इच्छा करना भीख माँगना हो सकता है, पर प्रार्थना नहीं। संसार के व्यवहारों में ही हम अनुभव करते हैं कि जो स्वयं पुरुषार्थ करता है, उसकी सहायता करने के लिए दूसरे भी सहर्ष तैयार रहते हैं। जैसे–कोई विद्यार्थी यदि पढ़ाई में स्वयं मेहनत करता है, तो आवश्यकता होने पर अध्यापक एवं अन्य लोग भी उसका मार्गदर्शन कर सहायता करने को तैयार रहते हैं, जबकि स्वयं मेहनत न करने वाले की सहायता करने के लिए कोई तैयार नहीं होता। उसे दूसरों के द्वारा तिरस्कृत ही होना पड़ता है। इसी प्रकार, काम करने वाले गरीब, किन्तु मेहनत करने वाले की आर्थिक सहायता करने के लिए बहुत लोग तैयार हो जाते हैं, लेकिन हट्टे–कट्टे साधु वेशधारी बाबाओं के माँगने पर उन्हें लोगों की खरी–खोटी सुननी पड़ती है। हम जानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति दोनों हाथ पैंट में डालकर खड़ा है और सामान उठाने के लिए दूसरों से सहायता माँग रहा हो तो कोई आगे नहीं आएगा, जबकि उठाने की कोशिश करने वाले की सहायता के लिए बहुत से लोग तैयार हो ही जाते हैं। इसीलिए महर्षि ने 'पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त' जैसे शब्दों को जोड़ा।

यदि हम परमेश्वर से धन, बल, बुद्धि, विद्या आदि की प्राप्ति के लिए प्रार्थना करते हैं, तो पहले इनको प्राप्त करने के लिए प्रयास करना होगा तभी सहायता मिलेगी, अन्यथा नहीं। वेद का भी उपदेश है– **'कृतं में दक्षिणे हस्ते जयो में सव्य आहितः'** अर्थात् हे मानव! तेरे दायें हाथ में कार्य यानि पुरुषार्थ है, तो बायें में विजय की प्राप्ति निश्चित है।

परमेश्वर हमारी माँ हैं। जिस प्रकार कार्य में व्यस्त एक माँ भी अपने छोटे शिशु को तभी दुग्धपान कराती है, जब वह (बहुत ही छोटा शिशु) रोने का पुरुषार्थ करता है अथवा बड़ा हो जाने पर घुटनों के बल चल कर माँ के पास पहुँचने का श्रम करता है। अन्यथा माँ भी अपने काम में लगी रहती है। इसी प्रकार परमेश्वर रूपी माँ भी अपने बच्चों को निकम्मा नहीं अपितु पुरुषार्थी देखना चाहती है। पुरुषार्थी तो अपना बिगड़ा हुआ भाग्य भी बदल देता है।

प्रार्थना का दूसरा महत्वपूर्ण लक्षण **'उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए सहाय लेना'** लिखा है। अर्थात् सहायता लेने का उद्देश्य अच्छा यानि अपने व दूसरे का हित करना ही होना चाहिए किसी को हानि पहुँचाना नहीं। जैसे कि कोई प्रार्थना करे–हे भगवन्! मेरे पड़ोसी को व्यापार में घाटा हो जाये अथवा किसी का नाश या मृत्यु हो जाये, आदि। इस प्रकार की प्रार्थनायें न तो करनी चाहिए और न ही ईश्वर इन्हें स्वीकार करता है।

इस परिभाषा में परमेश्वर अथवा सामर्थ्य वाले किसी मनुष्य से सहायता लेने को कहा गया है, जो एकदम उचित और युक्तियुक्त है। क्योंकि धन की आवश्यकता होने पर धनवान् से ही सहायता मिलनी सम्भव है, इसी प्रकार, किसी आक्रमणकारी से सुरक्षा की इच्छा होने पर बलवान ही सहायता कर सकता है, निर्बल नहीं। परमेश्वर तो सब सामर्थ्य वाले हैं ही, अतः उनसे प्रार्थना की जा सकती है।

प्रार्थना का फल– अभिमान का नाश, आत्मा में आर्द्रता, गुण ग्रहण में पुरुषार्थ और अत्यन्त प्रीति का होना 'प्रार्थना का फल' है।

यही कारण है कि वेदों के साथ–साथ हमारे अन्य शास्त्रों में भी पुरुषार्थ के अतिरिक्त प्रार्थना का बहुत महत्व बताया गया है। वेदों में तो प्रार्थना रूप में अनेक मन्त्र भरे पड़े हैं। दैनिक यज्ञ से पूर्व 'ईश्वर स्तुति–प्रार्थना–उपासना' मन्त्रों में भी अनेक प्रार्थनाओं का विधान है। गायत्री–मन्त्र में **'धियो यो नः प्रचोदयात्' एवं 'विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्नासुव।'** मन्त्र प्रार्थना के सुन्दर उदाहरण हैं।

व्याख्या–रत्न संख्या 24 में उल्लिखित परिभाषा के अनुसार प्रार्थना करने से क्या लाभ अथवा फल प्राप्त होता है, उसका उल्लेख इस परिभाषा में निम्न रूप में किया गया है ❑ प्रार्थी के अभिमान व अहंकार का नाश होता है, ❑ प्रार्थना से आत्मा में आर्द्रता अर्थात् संवेदनशीलता में वृद्धि होती है, ❑ दूसरों के गुणों को देखकर उन्हें धारण करने में उत्साह होने से पुरुषार्थ बढ़ता है, तथा ❑ उन गुणों में तथा जिससे प्रार्थना की जाती है उस परमेश्वर और व्यक्ति के साथ बहुत अधिक प्रीति भी हो जाती है।

प्रार्थी अपना श्रम करने के साथ–साथ दूसरे से प्रार्थना तभी कर सकता है, जब उसमें नम्रता हो। बिना नम्रता के प्रार्थना करना सम्भव ही नहीं है। इस विनम्रता में अभिमान या अहंकार का नष्ट होना स्वाभाविक है और अहंकार का नाश व्यक्ति को नम्र बनाता ही है। इस प्रकार ये दोनों गुण अन्योन्याश्रित हैं। फिर वह विनम्र व्यक्ति दूसरों के, विशेष रूप से जिससे सहायता प्राप्त करने की आशा होती है उसके गुणों को सरलता व सहजता से स्वीकार करने लगता है। इससे गुणी के साथ प्रीति होना स्वाभाविक है और जिसके साथ प्रीति होती है स्वाभाविक रूप से ही उसके गुणों को जीवन में धारण करने का प्रयास भी होने लगता है। इस प्रकार, प्रार्थना के फल के रूप में बताये गये ये गुण प्रार्थी को प्राप्त होते हैं। **'प्रार्थना से निरभिमानता, उत्साह और सहाय्य का मिलना**– स.प्र. सप्तम समु.।'

–साभार आर्योद्देश्यरत्नमाला प्रकाश

❑ लगातार आगे बढ़ते रहने के लिए यह जरूरी है कि हम निरंतर अपने लक्ष्य ओर बड़े करते जाए।

❑ घर बड़ा हो या छोटा अगर मिठास ना हो तो इंसान तो क्या चींटिया भी नहीं आती।

वर्ण-व्यवस्था

❒ डॉ. सोमदेव शास्त्री

मनुष्य जाति एक:- मनुष्यों में हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्धानि तथा पंजाबी, बंगाली, हिन्दुस्तानी, पाकिस्तानी आदि भेद मनुष्यों के बनाये हुए हैं। कुछ भेद स्थान और देश के कारण से बन गये हैं और कुछ भेद मान्यता-विश्वास रीति रिवाजादि के कारण बन गये हैं। ये सब भिन्नताएं जो आज पायी जाती हैं वे सब ईश्वर की बनाई हुई नहीं है। ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार सारी मनुष्य जाति एक है। शास्त्रों ने भी मनुष्य जाति को एक ही कहा है। ईश्वरीय रचना के अनुसार सभी देश और प्रान्तों में पाये जाने वाले मनुष्यों के शरीर के अंग, नाक, कान, आँख, हाथ, पैरादि में समानता है। ऐसा नहीं पाया जाता है कि किसी देश के रहने वाले मनुष्य की दो आंखे हो और दूसरे देश के रहने वाले मनुष्य की दो के स्थान पर तीन या चार आँखे पायी जाती है। मनुष्य शरीर के अंगों की समानता ही यह स्पष्ट करती है कि ईश्वरीय व्यवस्था में सम्पूर्ण मानव जाति एक है।

चार वर्ण:- एक ही मनुष्य जाति अलग-अलग कार्यों की दृष्टि से चार भोगों में विभक्त हो गयी। जिन्हें वर्ण कहते हैं। ये वर्ण ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य और शूद्र है। वृञ वरणे धातु से वर्ण शब्द बनता है। गुण-कर्म और स्वभाव के अनुसार जिसका चयन किया जाय उसको वर्ण कहते हैं, अथवा अपने स्वभाव-योग्यता और कार्य करने की क्षमता को देखकर जिसको स्वीकार किया जाता है उसे वर्ण कहते हैं। चारों वर्णों के अपने अपने कर्म हैं जो मनुष्य जिस वर्ण के कार्यों को करने के योग्य अपने को समझता है, वह उस वर्ण को स्वीकार करता है। अथवा अध्ययन की समाप्ति पर विद्यार्थी के गुण स्वभाव और कार्य करने की योग्यता और क्षमता को देखकर गुरु उसके कर्ण की घोषणा करता था। इसलिए ये वर्ण कहलाते हैं।

उपाधि एवं वर्ण:- जिस प्रकार विद्या समाप्ति पर स्नातकों के वकील, डाक्टर, इंजीनियर आदि विषयक उपाधियाँ (Digree) दी जाती हैं उसी प्रकार प्राचीनकाल में ब्राह्मण-क्षत्रियादि (उपाधियाँ) वर्ण दिये जाते थे। वर्तमान युग में वकील या डाक्टर का लड़का बिना पढ़े वकील या डाक्टर नहीं बनता है ठीक इसी प्रकार प्राचीन युग में ब्राह्मण या क्षत्रिय का लड़का ब्राह्मणोचित या क्षत्रियोचित कर्म किये बिना ब्राह्मण और क्षत्रिय नहीं बनता था।

जन्म से नहीं कर्म से वर्ण व्यवस्था:- मध्य काल में अनेक कुरीतियाँ हमारी संस्कृति में आ गयी। उनमें एक कुरीति यह भी आ गयी कि वर्णव्यवस्था कर्म के स्थान पर जन्म के अनुसार मानी जाने लगी। जिससे अनेक दुष्परिणाम हुए। अयोग्य व्यक्ति अपने पिता की योग्यता, गुण तथा ब्राह्मणोचित कार्यों के अनुसार अपने आपको भी ब्राह्मण कहने, मानने लगे। जब कि मनुस्मृति में लिखा है कि यदि शुद्र पिता का पुत्र ब्राह्मणोचित गुण प्राप्त कर ले और तदनुसार कर्म करने लग जाये तो वह ब्राह्मण जो जाता है और ब्राह्मण कुलोत्पन्न व्यक्ति ब्राह्मोचित कर्म योग्यता तथा गुणहीन हो जाय तो वह शूद्र हो जाता है। मनु की इस व्यवस्था से हमेशा योग्यता प्राप्त करने की प्रेरणा मनुष्य को मिलती रहती थी। और ब्राह्मण कुल में उत्पन्न व्यक्ति को भी भय रहता था कि यदि मैं इन आदर्श गुणों को प्राप्त नहीं करूंगा तो इस वर्ण से विहीन हो जाऊँगा। इसलिए वह भी अपनी योग्यता व गुणों की प्राप्ति तथा उपयुक्त कर्म को करने में प्रयत्नशील रहता था।

ब्राह्मणादि वर्णों के कर्म:- ब्राह्मण के कर्मों का उल्लेख करते हुए मनु ने लिखा है।

अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा।
दानं प्रतिग्रहश्चैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ (मनु. 1-88)

पढ़ना, पढ़ाना तथा यज्ञ करना और कराना, दान देना और लेना ये छ: कर्म ब्राह्मण के बताये हैं। अर्थात् जो व्यक्ति स्वयं शास्त्रों का अध्ययन करता है और दूसरों को पढ़ाता है, सत्य मार्ग दिखलाता है। यज्ञ स्वयं करता है और दूसरों के यहां भी यज्ञ कराता है। अपनी जीविका के लिए यज्ञ कराने और पढ़ाने के निमित्त से दूसरों से दान ग्रहण करता और शुभ कर्मों में स्वयं भी दान देता है ये शुभ कर्म करने वाला ब्राह्मण कहलाता है जो इन कर्मों से विहीन होगा वह ब्राह्मण वर्ण से विहीन हो जायेगा। इस वर्ण में रहने के लिए उसे इन कर्मों में निरन्तर लगा रहना होता है।

ब्राह्मण के गुण:- ब्राह्मण के कार्य के साथ उसमें क्या गुण होने चाहिए इस विषय में वेद में मुख के साथ तुलना करके अच्छा मार्ग निर्दिष्ट किया है। मनुष्य शरीर के सारे अंगों को वस्त्रों से ढके रहते हैं। लेकिन भयानक सर्दी में भी मुख खुला ही रहता है। मुँह के समान ब्राह्मण को तपस्वी होना चाहिए। वह सर्दी-गर्मी, बरसात को सहन करने वाला हो अर्थात् मान-अपमान-सुख-दु:खादि द्वन्द्वों में समान रहे। तभी वह अपने ब्राह्मणोचित कर्म का निर्वाह कर सकता है। मुँह में अच्छा से अच्छा खाद्यपदार्थ जाता है किन्तु वह अपने पास कुछ भी नहीं रखता है सब पेट में पहुँचा देता है। यदि दाँतों में कुछ फंसा भी रहता है तो जीभ चैन से नहीं बैठती है, वह कुरेद-कुरेद कर उसको निकाल ही देती है। ब्राह्मण भी मुँह के समान त्यागी और तपस्वी होना चाहिए। वह ध न के लोभ से जितना दूर होगा, सांसारिक प्रलोभन अपने पास आने नहीं देगा, वही अपने ब्राह्मण धर्म (कर्तव्य) का पालन कर सकेगा तथा समाज और राष्ट्र का मार्ग निर्देश कर सकेगा।

बाहु तुल्य क्षत्रिय:- ब्राह्मण के पश्चात् दूसरा-वर्ण-क्षत्रिय है। वेद में क्षत्रिय की तुलना बाहु-भुजा से की है। शरीर के किसी भी हिस्से पर किसी भी प्रकार का आक्रमण होता है तो दोनों भुजाएं शरीर की रक्षा करती हैं। इसी प्रकार समाज एवं राष्ट्र पर होनेवाले आक्रमणों से रक्षा करनेवालों को क्षत्रिय कहते हैं। क्षत्रिय का उल्लेख करते हुए मनुस्मृति में लिखा है

प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च।
विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासत:। (मनु. 1-89)

अर्थात् प्रजा की रक्षा करना, दान देना, यज्ञ करना और स्वाध्याय करना, विषय वासना में न फंसकर जितेन्द्रिय होकर सदा बलवान् और चरित्रवान् रहन ये क्षत्रिय के कर्म है। साधन और अधिकार प्राप्त होने पर मनुष्य में विषय-वासनादि चारित्रिक दोष उत्पन्न होने की संभावना रहती है। इसलिए इस विषय में सचेत करते हुए मनु ने क्षत्रिय को अपने कर्म की ओर ध्यान दिलाया। इस विषय में ब्राह्मण क्षत्रिय को हमेशा सेचत करता रहे। इसलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि ब्राह्मण अपना कल्याण चाहे तो क्षत्रिय को उचित शिक्षा दिया करे यदि

क्षत्रिय बिगड़ जायेंगे तो ब्राह्मण भी आलसी और प्रमादी हो जायेगा।

शरीर का मध्यभाग वैश्यः- वैश्य की तुलना शरीर के मध्य भाग से की है, जिसमें उदर आता है। मनुष्य जो भी खाता है वह सब पेट में जाता है जहां रस रक्तादि धातुओं का निर्माण होता है। शरीर के सभी हिस्सों में रस रक्तादि धातुएं जाती हैं पेट सभी पदार्थों को अपने पास नहीं रखता है। अनावश्यक पदार्थों को मल मूत्रादि के द्वारा शरीर से बाहर निकाल देता है। ठीक इसी प्रकार वैश्य धन कमाता है और ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्रादि को उनकी आवश्यकता के अनुसार दे देता है। सारा धन अपने पास नहीं रखता है। मनुष्य के उदर में स्थित पदार्थ शरीर के सभी अंगों में न जाय और अनावश्यक पदार्थ शरीर से बाहर न निकले तो शरीर रोगी हो जाता है। इसी तरह वैश्य सारा धन अपने ही पास रखे दूसरों को आवश्यकतानुसार न दे, तो समाज या राष्ट्र रोगी हो जाता है अर्थात् चोरी डाका, लूट-पाट और मालिक तथा मजदूरों के बीच संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है। वैश्य के कर्तव्यों के बारे में मनुस्मृति में लिखा है

पशूनां रक्षणं दानमिज्याध्ययनेव च।
वणिक्पथं कुसीदं च वैश्यस्य कृषिमेव च।। (मनु. 1.90)

वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय करना, दान देना, पशुओं का पालन करना, व्यापार करना, व्यापार कार्य में ब्याज लेना-देना और खेती करना वैश्य के कर्म है। वेदों का स्वाध्याय करना, यज्ञ करना और दान देना ये तीनों कर्म ब्राह्मण-क्षत्रिय और वैश्य के समान है। ये तीनों कर्म तीनों वर्णों के लिए समान रूप से अनिवार्य बताये गये हैं। इन तीनों वर्णों के लिए द्विज शब्द का प्रयोग होता है। दो बार इनका जन्म एक बार घर पर दूसरी बार गुरुकुल में अर्थात् उपनयन संस्कार होता है, इसलिए इन्हें द्विज कहते हैं।

शूद्र की तुलनाः- चौथा वर्ण शूद्र है, शूद्र की तुलना वेद में पैरों से की गयी है। जिस प्रकार पैरों के बिना मनुष्य चल नहीं सकता, शरीर का सारा भार पैर उठाये फिरते हैं, उसी प्रकार शूद्रों के बिना समाज चल नहीं सकता है अर्थात् उसका गुजारा नहीं हो सकता है समाज का सारा भार शूद्र ही उठाये रखते हैं। शूद्र के कार्यों का उल्लेख करते हुए मनुस्मृति में लिखा है

एकमेव तु शूद्रस्य प्रभुकर्म समादिशत्।
एतेषामेव वर्णानां शुश्रूषामनुसूयया। (मनु. 1-91)

जिसको पढ़ाने से विद्या न आवे, अर्थात् जो पढ़ाने, राष्ट्र की रक्षा करने या व्यापार करने में समर्थ या योग्य नहीं है, उसे शूद्र कहा गया है। ब्राह्मण शास्त्रों को पढ़ाकर अज्ञान को दूर करता है। क्षत्रिय अन्याय के साथ संघर्ष करके समाज और राष्ट्र की रक्षा करता है और वैश्य व्यापार करके पदार्थों का अभाव को दूर करता है। अर्थात् जो अविद्या-अन्याय और अभाव को दूर करने में असमर्थ और अयोग्य है उसे शूद्र कहा गया है। तो फिर शूद्र के क्या कर्तव्य हैं इस विषय में मनु ने लिखा है कि ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों वर्णों की ईर्ष्या द्वेष से रहित होकर सेवा करना, यही एक कर्म करने का शूद्र के लिए उपदेश है। इनकी सेवा करके अपनी जीविका चलाना है तथा जो लोग पढ़ने पढ़ाने, रक्षा करने और व्यापार करने में व्यस्त हैं उनके लिए भोजन पकाना, कपड़े धोना, बर्तन साफ करना, झाड़ू लगाना आदि शारीरिक कार्य हैं इन कार्यों को करके ब्राह्मणादि वर्णों की सेवा करना यही शूद्र का प्रमुख कर्म है।

वर्णों में ऊँच नीच का भेद नहीं:- शरीर में जिस प्रकार चारों अंग (सिर-हाथ-पेट-पैर) आवश्यक और महत्वपूर्ण है। एक के बिना अन्य तीनों का काम नहीं चल सकता है। इनमें कोई छोटा बड़ा या ऊँच नीच नहीं है। वेद में सभी वर्णों के लिए समान रूप से प्रार्थना की गयी है। जैसे कि यजुर्वेद में कहा है, हे प्रभो! मेरी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र में रूचि हो, मैं चारों वर्णों से प्रेम करूँ और चारों वर्ण मुझसे प्रेम करें चारों वर्णों का समान स्थान वेदों में बताया है।

- 309, मिल्टन अपार्टमेन्ट, जुहू, कोलिवाडा, मुम्बई-110049

दिनांक 20, 21, 22 फरवरी 2020 को आयोजित ऋषि बोधोत्सव हेतु दिल्ली से राजकोट जाने वाली गाड़ियां का विवरण

(1) देहरादून ओखा उत्तरांचल एक्स., ट्रेन न. 19566 नई दिल्ली से राजकोट दोपहर, 1.10 बजे **(2) जामनगर कटरा एक्सप्रेस, ट्रेन नं. 12478,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.30 बजे **(3) हापा एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12476,** नई दिल्ली से राजकोट रात्रि 9.30 बजे **(4) सराय रोहिल्ला पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19264,** सराय रोहिल्ला से राजकोट प्रातः 8.20 बजे **(5) पोरबन्दर एक्सप्रेस, ट्रेन न. 19270,** पुरानी दिल्ली से राजकोट दोपहर 01-05 बजे **(6) पोरबन्दर एक्सप्रैस ट्रेन न. 19264** प्रातः 8.20 सराय रोहिला से राजकोट **(7) सराय रोहिला राजकोट एक्सप्रैस ट्रेन न. 19580,** दोपहर 1.30 बजे सराय रोहिला से राजकोट। **(8) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12916,** पुरानी दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन 3.20 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा **(9) राजधानी एक्सप्रेस, ट्रेन न. 12958,** नई दिल्ली से अहमदाबाद प्रतिदिन सायं 7.55 बजे, अहमदाबाद से बस द्वारा।

राजकोट से दिल्ली जाने वाली गाड़ियाँः (1) हापा एक्सप्रैस, ट्रैन न. 12475, राजकोट से नई दिल्ली सुबह 6.50 बजे। **(2) राजकोट सराय रोहिला एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19579,** राजकोट से सराय रोहिला दोपहर 12.30 बजे। **(3) मोतिहारी एक्सप्रैस, ट्रैन न. 19269,** राजकोट से पुरानी दिल्ली सायं 7:35 बजे। **(4) जामनगर कटरा एक्सप्रैस, ट्रैन न. 12477,** राजकोट से नई दिल्ली सुबह 6:50 बजे। **(5) आश्रम एक्सप्रेस, ट्रैन न. 12915,** अहमदाबाद से पुरानी दिल्ली प्रतिदिन सायं 6.30 बजे, अहमदाबाद तक बस द्वारा। **(6) राजधानी एक्सप्रेस ट्रेन न. 12957,** अहमदाबाद से नई दिल्ली प्रतिदिन सायं 5.40 बजे अहमदाबाद तक बस द्वारा।

बलवान मनुष्य एवं संगठित समुदाय ही सुरक्षित रह सकते हैं

❒ मनमोहन कुमार आर्य

परमात्मा ने जीवात्माओं को स्त्री या पुरुष में से एक प्राणी बनाया है। हम सामाजिक प्राणी हैं। हम समाज में अकेले नहीं रह सकते। परिवार में माता-पिता, दादी-दादा, भाई-बहिन, बच्चे व अन्य कुटुम्बी-जन होते हैं। परिवार समाज की एक इकाई होता है। परिवार प्राय: संगठित ही होता है। जो परिवार विचारों एवं भावनाओं की दृष्टि से जितना अधिक संगठित होगा वह उतना ही सुरक्षित एवं उन्नति करता है। यदि हमारा परिवार, समाज और देश एक विचारों वाला नहीं है तो उसका संगठित होना कठिन होता है। ऐसी स्थिति में वह समाज व देश सर्वथा सुरक्षित नहीं हो सकता। कोई भी व्यक्ति, समाज, संगठन व सम्प्रदाय कभी किसी भी कारण से हम व हमारे स्वजातीय बन्धुओं पर अकारण व किन्हीं स्वार्थों से प्रेरित होकर आक्रमण कर सकता है और असंगठन की स्थिति में हम उन संगठित अपराधियों से अपनी रक्षा नहीं कर सकते। हमने पाकिस्तान बनने पर पाकिस्तान में रहने वाले अपने भाईयों पर हिंसा की अमानवीय निन्दित घटनाओं को सुना व पढ़ा हैं जहां हमारे लाखों निर्दोष धर्म-बन्धु हिंसा की भेंट चढ़ा दिये गये थे। यहां तक की दरिन्दों ने स्त्रियों व बच्चों पर ही दया नहीं की थी। वह यह भूल गये थे व भूल चुके हैं कि उनके पूर्वज भी कभी आर्य व हिन्दू थे। तलवार की जोर पर उनके पूर्वजों का विगत लगभग एक हजार वर्षों में धर्मान्तरण किया गया था। कश्मीर में हमारे कश्मीरी पण्डित भाईयों के साथ भी जो हैवानियत का व्यवहार किया गया उसकी पीड़ा को तो हमारे कश्मीरी भाई ही भली-भांति समझ व अनुभव कर सकते हैं। हम उनके दु:खों का पूरा पूरा अनुमान व अनुभव नहीं कर सकते। आश्चर्य है कि हमारे देश की राजनीतिक पार्टियों ने भी इन घटनाओं पर न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया। वह सत्ता प्राप्ति व सत्ता को बचाने के लिये ऐसे कृत्यों की भर्त्सना तक नहीं कर पाते। यदि ऐसा ही व्यवहार किसी अन्य समुदाय के किसी एक व्यद्रि से भी हुआ होता तो जो लोग मौन रहे वह हाय-तोबा मचा कर आकाश पाताल एक कर देते।

अत: अन्याय व अत्याचार से बचने के लिये प्रत्येक भारतीय व वैदिक धर्मी को प्रमाद छोड़कर अपने शेष बन्धुओं के साथ संगठित होना होगा। हम सबका यह प्रयास होना चाहिये कि हमारी विचारधारा के किसी बन्धु पर भी संकट आता है तो हम सबको उसकी पीड़ा व तड़प होनी चाहिये जैसे वह घटना हमारे साथ ही घटी हो। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो आने वाले समय में हम सुरक्षित नहीं रह सकते। हमें किसी को हानि पहुंचाने के लिये संगठित नहीं होना है अपितु अपनी व अपने परिवारों सहित अपने बन्धुओं, परिवारों व समुदाय की रक्षा के लिये संगठित होना है। आठवी शताब्दी से हम पिटते आ रहे हैं। हमारा अपराध यही है कि हम सत्य, अहिंसा और वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना में विश्वास रखते हैं और संसार के सभी मनुष्यों यहां तक की पशुओं को भी अपने समान ही आत्मा वाला अपना बन्धु समझते हैं। वर्तमान समय में जैसी परिस्थितियां हैं उसमें हमें अपनी रक्षा हेतु परस्पर संगठित होना ही होगा और अपनी मनुष्य जाति, धर्म, मत, विचारधारा, अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित आदि पर आधारित सभी भेदभावों को भुला देना होगा। इसके साथ ही हमें अपने स्वजातीय धर्म बन्धुओं व उनके परिवारों की रक्षा भी करनी होगी। इसके लिये हमारे पास जो भी साधन हैं उसका 25 से 50 प्रतिशत भाग हमें अपने बन्धुओं के हित, सुख व कल्याण पर व्यय करना चाहिये। ऐसा करेंगे तभी हम बचेंगे। ऐसी स्थिति प्राप्त होने पर किसी का साहस नहीं होगा कि कोई हमें अकारण प्रताड़ित करे। यदि प्रताड़ित करता है तो हमारे भीतर वह संगठित शक्ति होनी चाहिये कि हम अपनी रक्षा करते हुए आततायियों को उचित यथायोग्य सबक सीखा सकें।

परमात्मा ने इस सृष्टि को बनाया है। वह हमें सृष्टि में संगठित रहने के अनेक उदाहरण भी प्रस्तुत करता है। सारे ब्रह्माण्ड के सभी सूर्य व अन्य ग्रह-उपग्रह आदि परस्पर संगठित एवं सहयोगी हैं। हमारा सौर मण्डल व इसके सभी ग्रह-उपग्रह आदि भी संगठित व परस्पर पूरक हैं। मधु-मक्खी का उदाहरण भी दिया जा सकता है। यदि कोई मक्खियों के छत्ते पर एक पत्थर मार देता है तो सभी मक्खियां उस पर झपट पड़ती है और पत्थर मारने वाले व्यक्ति को अपने प्राण बचाने कठिन हो जाते हैं। चींटियों को भी हम पंद्रिबद्ध अनुशासन में चलता हुआ देखते हैं। जंगलों में रहने वाले अहिंसक व हिंसक प्राणी भी समूहों में रहते हैं। पक्षियों को भी समूह में उड़ते देखा जाता है जो उनके संगठित जीवन का प्रतीक प्रतीत होता है। ईश्वर ज्ञान ऋग्वेद 10/191 में 4 मन्त्रों का एक संगठन-सूक्त आता है। आर्यसमाज के सत्संगों में इस संगठन का सूक्त का पाठ किया जाता है। इसमें कुछ विचार व पंक्तियां हैं 'प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनों पूर्वजों की भांति तुम कर्तव्य केमानी बनो। हो विचार समान सबके, चित्त मन सब एक हों, हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा। मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा' आदि। वेदाज्ञा होने और ऐसा गीत गाने पर भी हम संगठित नहीं हो पाते। लोकैषणा, वित्तैषणा और पुत्रैषणा आदि क्षुद्र स्वार्थों के कारण हम एक दूसरे के विरोधी हो जाते हैं। दूसरे लोगों के पास वेद जैसी शिक्षायें न होने पर भी वह हमसे अधिक संगठित दीखते हैं और विवाद होने पर परिणाम की परवाह नहीं करते। देश, धर्म व जाति की सुरक्षा के लिये संगठन की परम आवश्यकता है। इसी कारण से वेद, धर्म, ऋषि संस्कृति एवं वेद के मानने वालों की रक्षा के लिये ऋषि दयानन्द ने ''आर्यसमाज'' की स्थापना की थी। आर्यसमाज के नियम भी बनाये गये जिसमें सब आर्यों को सत्य को जीवन में प्रमुख स्थान देने को कहा गया है। यह भी कहा गया है कि मनुष्य को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये। संगठन तभी चलते हैं जब वहां इस नियम का पालन किया जाता है। आर्यसमाज के बाद हिन्दुओं को सुरक्षित रखने के लिये आर.एस.एस. नाम का भी एक राष्ट्रीय संगठन बना था। इस संगठन ने भी देश व समाज की अच्छी सेवा की है। अभी इसके विस्तार एवं अन्यों के समान शक्तिशाली बनने की महती आवश्यकता है। यह भी लिखना आवश्यक है कि आर.एस.एस. एक राष्ट्रीय एवं देश एवं समाज का हितकारी संगठन है। राष्ट्र का गौरव एवं हित तथा भारतीय संस्कृति का सरंक्षण इस संगठन के लिये सर्वोपरि है। यह बात अलग है कि वह ऋषि दयानन्द के सत्य व हितकारी विचारों तथा मान्यताओं को स्वीकार नहीं करते। इसके अतिरिक्त अन्य सभी संगठन भीतर से आर्यसमाज और आरएसएस जैसे राष्ट्रवादी नहीं हैं।

आर्यसमाज एवं आर.एस.एस. अपनी-अपनी भूमिका भली प्रकार से निभायें और आवश्यकता पड़ने में संगठित होकर कार्य करें जिससे सनातन वेद के मानने वाले आस्तिक जन सुरक्षित रह सकें। ऐसा इसलिये कि इस बहुसंख्यक आर्य व हिन्दू समाज की इसके विरोधियों से रक्षा करने वाला कोई नहीं है। इन्हें अपनी रक्षा स्वयं करनी है।

सभी देशों ने अपने यहां सेनायें रखी हुई हैं। इनका उद्देश्य बाहरी वा पड़ोसी देशों के आक्रमण से अपनी अपनी प्रजाओं की रक्षा करना है। कोई आक्रमण कब करेगा या नहीं इसका पता नहीं होता फिर भी सभी देश अपनी रक्षा के लिये सेनायें रखते हैं। हमें भी इनसे शिक्षा लेकर अपने आपको सुख्रण बनाना है। यह तभी सम्भव है कि जब ईश्वर, वेद, राम, कृष्ण, चाणक्य और दयानन्द को मानने वालों में किसी प्रकार का मतभेद व भेदभाव न हो। मतभेद व भेदभाव मनुष्य व समाज को कमजोर बनाते हैं। इस बात को समझ कर हमें अपने सभी मतभेदों व भेदभावों को दूर करना चाहिये। समाज में यदि अन्धविश्वास, पाखण्ड, अज्ञान तथा सामाजिक असमानता आदि है तो भी समाज सृदृण एवं संगठित नहीं हो सकता और असंगठित समाज अपने विरोधियों से अपनी रक्षा नहीं कर सकता। हमें यदा कदा मुगल शासकों के हिन्दुओं पर अत्याचारों को भी स्मरण कर लेना चाहिये। क्या कारण था कि हमारे मन्दिर तोड़े गये, हमारे पूर्वजों व भाई-बन्धुओं का तलवार के जोर पर धर्मान्तरण किया गया तथा देश को लूटा गया। हमारे पूर्वज अपने इन शत्रुओं से देश व समाज की रक्षा न कर सके। कारण यही था कि वह संगठित नहीं थे। इतना ही नहीं वह अपनी माताओं, बहिन व बेटियों की रक्षा भी नहीं कर सके। अपनी रक्षा के प्रति सचेत व सावधान होना मनुष्य जाति व समुदाय का कर्तव्य होता है, हमारा भी है, इसे हमें समझना है। हमें सावधान करने व हमारी रक्षा के लिये अब राम, कृष्ण, दयानन्द, चाणक्य, हनुमान, भीष्म, भीम, परशुराम, शिवाजी, महाराणा प्रताप, बन्दा बैरागी एवं गुरु गोविन्द सिंह जी आदि नहीं आयेंगे। हमें अपनी रक्षा स्वयं ही करनी है।

वैदिक धर्म की शिक्षा है कि न तो हमें किसी पर अत्याचार करना है और न किसी का अत्याचार पव अन्याय सहन करना है। हम अत्याचार न हों, इसके लिये ही हमें संगठित होना है। हम राम व कृष्ण की तरह से धनुष और सुदर्शन चक्र तो धारण नहीं कर सकते परन्तु हमें संगठित अवश्य ही होना चाहिये। संगठन शक्ति में वह बल है जिससे दूसरे प्रतिद्वन्दियों का बल क्षीण हो जाता है। इजराइल इसका उदाहरण है। वह छोटा सा देश अपने ज्ञान, बल व संगठन से ही अपने देश के अस्तित्व को बचाये हुए है। यह एक छोटा देश हमारी भी सहायता करता है। हमें भी उसके जैसा बनने का प्रयत्न करना चाहिये। स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से भी यही शिक्षा मिलती है कि हम बलवान हों और संगठित हों। हमने यह लेख आर्य व अपने हिन्दुओं बन्धुओं को अपने मतभेद व भेदभाव दूर कर संगठित होने के लिये लिखा है। हमें अपनी रक्षा के लिए परमुखापेक्षी नहीं होना है अपितु अपनी रक्षा करने में स्वयं समर्थ होना है। ऐसा होने पर ही हम सुरक्षित रह सकते हैं। देश का सौभाग्य है वर्तमान में सबका हित करने वाली सरकार केन्द्र में है। हमें मोदी जी व अमित शाह के नेतृत्व में देश को सशक्त बनाने में योगदान देना चाहिये। समझदार व्यक्ति को संकेत करना ही पर्याप्त होता है। हमने अपने कर्तव्य का पालन किया है।

-196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-248001, फोन:9412985121

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव 2020

आर्य जनों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य **ऋषि बोधोत्सव का आयोजन वीरवार, शुक्रवार, शनिवार 20, 21, 22 फरवरी 2020** को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज एवं अपनी संस्था का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्य जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजन की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

- मन्त्री ट्रस्ट रामनाथ सहगल

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

केवल व्यक्तिगत ही नहीं संस्थाएं भी सदस्य बन सकती हैं।

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलों में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां कई वर्षों से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते हैं कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मीयता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते हैं। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि जन्मस्थान से जुड़ सकते हैं। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

शिवराजवती आर्या
(उप-प्रधाना)

रामनाथ सहगल
(मन्त्री)

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

आगामी ऋषि बोधोत्सव 2020 के उपलक्ष्य में टंकारा ट्रस्ट की ओर से युवाओं के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है। जिसमें भाग लेकर युवाशक्ति अपनी प्रतिभा उजागर करें।

वॉलीबॉल (शूटिंग) टूर्नामेन्ट– (सौराष्ट्र प्रदेश के खिलाड़ियों के लिए)

❑ विजेता टीम को शील्ड प्रदान की जायेगी। ❑ विजेता खिलाड़ियों, बेस्ट शूटर व बेस्ट नेटी को पुरस्कृत किया जायेगा। ❑ प्रवेश पत्र दिनांक 09 फरवरी-2020 तक स्वीकृत होंगे। ❑ यह टूर्नामेन्ट दिनांक 15 से 17 फरवरी-2020 के बीच में टंकारा ट्रस्ट के परिसर में होंगी।

महर्षि दयानन्द खेल महोत्सव (टंकारा तहसील के विद्यार्थियों के लिए)

❑ कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाई-बहन भाग ले सकेंगे जिसमें विभिन्न मैदानी खेलों की प्रतियोगिता होंगी, जिसकी जानकारी विद्यालयों को अलग से दी जायेगी। ❑ विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कार व प्रमाण पत्र दिये जायेंगे।

डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार

समस्त गुरुकुलों के विद्यार्थियों को सूचित किया जाता है कि टंकारा में प्रतिवर्ष ऋषि बोधोत्सव पर डॉ. मुमुक्षु आर्य गुरु विरजानन्द सरस्वती पुरस्कार उस विद्यार्थी को दिया जाता है जिसे योगदर्शन के समस्त 195 सूत्र एवं यजुर्वेद के 40वें अध्याय के सब मन्त्र शुद्ध उच्चारण व अर्थ सहित कंठस्थ होंगे। जो ब्रह्मचारी इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपना नाम फोटो के साथ अपने गुरुकुल के प्राचार्य के माध्यम से टंकारा गुरुकुल के प्राचार्य/प्रतियोगिता संयोजक को भेज दें। प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले ब्रह्मचारी को क्रमशः पांच हजार, तीन हजार, दो हजार रूपये नगद व स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जायेगा।

❑ बाहर से आने वाले प्रतियोगियों को टंकारा तक आने-जाने का किराया दिया जायेगा।

❑ भोजन-आवास की सुविधा निःशुल्क रहेगी।

❑ भाग लेने के लिए गुरुकुल के प्राचार्य अपने छात्रों के नाम दिनांक 01 फरवरी 2020 तक पहुंचा देवे।

❑ यह प्रतियोगिता ऋषि बोधोत्सव पर दिनांक 20.02.2020 दोपहर 2.00 से 5.00 के सत्र में होगी।

अधिक जानकारी व नाम भेजने के लिए प्रतियोगिता संयोजक से सम्पर्क करें।

आचार्य रामदेव (प्राचार्य) मो. 9913251448

एयर इण्डिया हवाई जहाज से दिल्ली से राजकोट/टंकारा सीधे डेढ़ घंटे में

टंकारा के ऋषि भक्तों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अब दिल्ली से राजकोट के लिए एयर इण्डिया की सीधा फ्लाईट्स आरम्भ हो गई है। ऋषि भक्तों के लिए सुविधाजनक रहेगा। ऋषि भक्तो के सुविधा हेतु बुधवार 19 फरवरी 2020 दोपहर 12.55 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 403 एवम् सायं 05.15 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 495 दिल्ली से राजकोट के लिए जायेगी। राजकोट से टंकारा मात्र 40 किलोमीटर की दूरी पर है। इसी तरह राजकोट से दिल्ली के लिए शनिवार 22 फरवरी 2020 दोपहर 03.10 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 404 एवम् एवम् सायं 07.30 बजे एयर इण्डिया फ्लाईट न. 496, टंकारा जाने वाले ऋषि भक्त इसका लाभ उठा सकते हैं।

टंकारा समाचार के प्रसार में सहयोग दें

'टंकारा समाचार' उलट-पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से 'टंकारा समाचार' की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

'टंकारा समाचार' का वार्षिक शुल्क 200/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 1000/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं। **-प्रबन्धक**

नारी

❒ डॉ. राजपाल सिंह

जिस काल में हम रह रहे हैं, उसे वैज्ञानिक युग का नाम दिया जाता है तथा अपने को अत्यधिक विकसित एवं आधुनिक भी समझते हैं। परन्तु इस समय हमारे समाज में नारी की स्थिति एवं दशा किसी से छिपी हुई नहीं है। उसके साथ कैसा व्यवहार होता है तथा उसे क्या समझा जाता है? इस पर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं है। जिस युग को पुरातन दकियानूसी और सड़ी-गली सोच का प्रतीक माना जाता है, उस युग में भी नारी का स्थान बहुत ऊपर था।

वैदिक यज्ञ पद्धति में नारी यज्ञ वेदी पर पति के दायीं ओर बैठती है क्योंकि वैदिक मान्यता के अनुसार नारी, पुरुष से श्रेष्ठ है। वह दिव्य गुणों से विभूषित है। उसके साथी पुरुष के पास वे दिव्य गुण नहीं हैं। महर्षि कण्व के अनुसार तो पत्नी, पति के मोक्ष प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त करती है। अतः उसे सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। वास्तव में उसे जितनी जरूरत सुरक्षा और सम्मान की है, सम्पत्ति और अधिकार की उससे कम है। क्योंकि अगर उसे परिवार और समाज से सुरक्षा और सम्मान मिलता है तो अपने बल पर वह अधिकार और सम्पत्ति अर्जित कर लेगी। वह स्वयं क्षमता, सामर्थ्य और मेधा की धनी है। जिस परिवार/समाज में नारी को सम्मान मिलेगा वह परिवार/समाज उन्नति ही करेगा। ऐसे परिवार/समाज में शान्ति रहेगी तथा उसके सदस्य लड़ाई-झगड़ों में समय, शक्ति और धन को नष्ट न करके आगे बढ़ने की ओर अग्रसर होंगे। मनु महाराज तो यहाँ तक कहते हैं कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है तथा जहाँ अपमानित होती है, वहाँ सभी सत्कर्म निष्फल हो जाते हैं। मनुस्मृति में कहा गया है।

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥ -मनुस्मृति 3/56

इससे अगले श्लोक में वे कहते हैं-

शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
न शोचन्ति तु यत्रैता वर्धते तद्धि सर्वदा॥ -मनुस्मृति 3/57

अर्थात् जिस कुल में नारी क्लेश भोगती है, वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है, किन्तु जहाँ इन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता, वह कुल सर्वदा बढ़ता है। वैदिक संस्कृति की महानता और भव्यता से घबराकर विरोधियों ने इसको बदनाम करने के लिए कई भ्रम फैला दिये। उदाहरण के लिए एक भ्रम यह फैलाया गया कि नारी एवं शूद्र के वेदमन्त्र सुनने पर उनके कान में पिघला हुआ शीशा डाल देना चाहिए। यह कथन भ्रामक है। क्योंकि **1.** अगर ऐसा होता तो उक्त दोनों महापुरुष (मनु एवं कण्व) वह न कहते जो उन्होंने कहा है। उनका कथन इस भ्रम के के बिलकुल विपरीत है। **2.** महर्षि दयानन्द वेद और वैदिक परम्परा के प्रबल के प्रबल समर्थक थे और उन्होंने नारी शिक्षा पर जोर दिया है। उनके प्रवचनों में नारियाँ भी भाग लेती थीं और वेदमन्त्र भी सुनती थीं। **3.** वैदिक सभ्यता जितनी प्राचीन है, उतनी ही प्राचीन वैदिक विवाह पद्धति भी है और विवाह संस्कार में वेदी पर बैठे वर, वधू वेदमन्त्रों को मात्र सुनते ही नहीं उनमें से कुछ बोलते भी हैं। परन्तु आदिकाल से अब तक एक भी ऐसा उदाहरण नहीं जिसमें शीशा डालने की घटना घटित हुई हो। वैदिक काल में नारी को मर्यादित स्वतन्त्रता थी। स्वयंवर प्रथा के द्वारा उसे अपना जीवन साथी चुनने का अधिकार था। जनसाधारण में विवाह सम्बन्ध हेतु मनुस्मृति में एक श्लोक आता है-

असपिण्डा च या मातुरसगोत्रा च या पितुः।
सा प्रशस्ता द्विजानां दारकर्मणि मैथुने॥ -मनुस्मृति 3/5

अर्थात्-जो कन्या माता की सात (संस्कारविधि में सात के स्थान पर छह) पीढ़ी के भीतर की तथा पिता के गोत्र की न हो, वह कन्या द्विजातियों के विवाह करने एवं सन्तान उत्पन्न करने योग्य होती है।

अर्थ पर ध्यान देने से ऐसा लगता है कि माता के वंश को छोड़कर किसी दूसरे वंश में विवाह सम्बन्ध हो सकता है भले ही माता और कन्या का गोत्र समान हो। हमारे समाज में इस समय माता और पिता दोनों के ही गोत्र बचाये जाते हैं।

गोत्र और गाँव के बाहर विवाह सम्बन्ध नारी की सुरक्षा और सम्मान के लिए महत्वपूर्ण थे और अभी भी हैं। बल्कि आज कहीं अधिक उपयोगी हैं। ऐसी बेटियाँ असंख्य हैं जो घर से बाहर काम काज के लिए जाती हैं उन्हें घर लौटने में देर सवेर हो जाती है। इसके अतिरिक्त शिक्षा ग्रहण करने के लिए भी घर से बाहर निकलती हैं। इनमें से प्रत्येक के साथ पुलिस का सिपाही भेजना संभव नहीं है।

मेरा मानना है कि नारी की इज्जत से अधिक मूल्यवान संसार की कोई वस्तु नहीं है। वही इज्जत लुटने अथवा जाने के बाद नारी का जीवन नीरस और निरर्थक हो जाता है। सम्मान मिले तो व्यक्ति एक वक्त रूखी-सूखी खाकर भी प्रसन्नता से जीवन निर्वाह कर सकता है। दूसरे हम अपनी हर कीमती वस्तु की सुरक्षा का प्रबन्ध उसकी कीमत के अनुसार ही करते हैं। स्वर्ण अथवा धन को खुले में नहीं छोड़ते। क्यांकि लुटेरां की कमी नहीं है। व हर समय ताक में रहते हैं। कीमती सामान देखकर सज्जन आर ईमानदार का ईमान भी डगमगा सकता हैं। इस समय समाज में जैसा वातावरण बना हुआ है, उसे देखते हुए नारी को भी लुटेरों से बचाने का प्रयास करना होगा। इसके लिए शालीन दिखने वाले वस्त्र धारण करना, अनजान व्यक्ति से सहायता न लेना, बाहर के खाने-पीने वाले सामान से बचना तथा समय का विशेष ध्यान रखना। दूरदर्शन और सिनेमा के परदे पर दिखाये जाने वाले दृश्य कच्चे एवं अपरिपक्व किशोर मन को आकर्षित एवं भ्रमित करने का काम करते हैं। इससे समाज में विकृतियाँ ही पैदा होती हैं। बलात्कार जैसे जघन्य अपराध के लिए मृत्यु दंड का प्रावधान होते हुए भी इस अपराध में वृद्धि ही देखने को मिल रही है। किशोरों द्वारा दिये गये बलात्कार के ये आँकड़ें अपनी कहानी स्वयं कह रहे हैं।

- स्व. हीरासिंह स्मृति आवास, गांधी रोड, बड़ौत, जनपद, बागपत, उत्तर प्रदेश

पं. दिनेश आर्य 'पथिक'

सुपुत्र पं. सत्यपाल 'पथिक'

वर्तमान में अमृतसर से पूर्ण रूप से नोएडा में उपलब्ध, अपनी आर्य समाज/शिक्षण संस्थान में वार्षिकोत्सव साप्ताहिक सत्संग एवम् प्रार्थना सभा (क्रिया/ उठाला) हेतु प्रेरणादायक भक्ति संगीत के लिए सम्पर्क करें- मो. 9872955841, 8368556770, 9855098530

आर्यो का तीर्थ स्थल टंकारा चलो (यात्रा अवधि 9 दिन)

टंकारा, बड़ौदा, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी, अहमदाबाद, कच्छ-भुज, रण-उत्सव, मांडवी

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा एवं उप-कार्यालय आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग एवं श्री रामनाथ सहगल जी प्रेरणा से धर्मप्रेमी बहनों व भाईयों के लिए महर्षि दयानन्द जन्म स्थान, टंकारा यात्रा कच्छ-भुज, रणोत्सव यात्रा का सुनहरी अवसर **19.02.2020** को नई रेलवे दिल्ली स्टेशन से चलेंगे व **28.02.2020** को वापिस दिल्ली यात्रा समाप्त होगी। इस यात्रा में जाने के लिए यात्रियों से निवेदन है कि वे अपनी सीट यथाशीघ्र बुक करवा ले। जिससे की रेलवे में कन्फर्म बुकिंग मिल सके इस यात्रा में बस-रेल व आने व भोजन का सभी खर्च शामिल है।

कार्यक्रम व दर्शनीय स्थलः- **19.02.2020** नई दिल्ली से राजधानी एक्सप्रेस द्वारा प्रस्थान। **20.02.2020** अहमदाबाद रेलवे स्टेशन प्रातः ट्रैन से उतरकर लोकल ट्रैन द्वारा राजकोट व टंकारा के लिए प्रस्थान। **21.02.2020** टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आनन्द ले। **22.02.2020** प्रातः 05 बजे टंकारा से बड़ोदा के लिए प्रस्थान व दोपहर 2 बजे तक बड़ोदा होटल में विश्राम। **23.02.2020** प्रातः नाश्ते के पश्चात सरदार बल्लभ भाई पटेल की नई मूर्ति यूनिटी वन एवं यात्री बड़ोदा से-अहमदाबाद के लिए रेल द्वारा प्रस्थान। **24.02.2020** प्रातः नाश्ते के पश्चात अहमदाबाद में गाँधी आश्रम, अक्षरधाम मंदिर, वैष्णो माता मंदिर भ्रमण। **25.02.2020** प्रातः नाश्ते के पश्चात अहमदाबाद से बस द्वारा भुज के लिए प्रस्थान। **26.02.2020** प्रातः नाश्ते के पश्चात कच्छ-भुज रणोत्सव भ्रमण।, **27.02.2020** प्रातः नाश्ते के पश्चात् रण महोत्सव व मांडवी एवं श्यामजी कृष्ण वर्मा का स्टेच्यू भ्रमण, **28.02.2020** प्रातः वापसी अहमदाबाद एवं श्याम का रेल व हवाई जहाज द्वारा दिल्ली के लिए प्रस्थान।

यात्रा किरायाः- 3 ए.सी. क्लास **26,800/-** सीनियर सिटीजन **25,800/-**, महिला सीनियर सिटीजन- **25,400/-**

किराया- 2 ए.सी. क्लास **28,600/-**, सीनियर सिटीजन **27,200/-**, महिला सीनियर सिटीजन- **26,800/-**

हवाई जहाजः- दिल्ली-अहमदाबाद-दिल्ली यात्रा किराया **30,500/-, 22.02.2020 से 28.02.20 तक।**

नोटः- इन सभी स्थानों पर रहने व खाने की व्यवस्था होटल में होगी और टंकारा में रहने व खाने की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क है।

आर्यो का तीर्थ स्थल टंकारा चलो यात्रा अवधि 4 दिनः- **19.02.2020** नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से राजधानी एक्सप्रेस द्वारा अहमदाबाद के लिए प्रस्थान, **20.02.2020** प्रातः 10 बजे लोकल ट्रेन द्वारा राजकोट व टंकारा में ऋषि जन्म भूमि के लिए प्रस्थान, **21.02.2020** टंकारा में ऋषि बोधोत्सव का आनन्द लें, **22.02.2020** प्रातः 5 बजे टंकारा से अहमदाबाद व शाम राजधानी द्वारा नई दिल्ली के लिए प्रस्थान, यात्री रेल किराया-5100/-, सीनियर सिटीजन-4650/-

❑ कहीं पर किसी मन्दिर, किले व् नोकारोहण के समय कोई टिकट लेना होगा तो वे यात्री स्वयं लेंगे। ❑ कार्यकर्म में समय के अनुसार परिवर्तन करने का अधिकार संयोजक का होगा। ❑ हमारी यात्रा में अकेली महिला व् वृद्ध महिलाऐं भी यात्रा कर सकती है क्योंकि हमारी यात्रा का माहौल घर परिवार जैसा होता है। ❑ सभी यात्रियों से निवेदन है कि वे अपना चैक या **DRAFT ARYA TRAVEL** अथवा विजय सचदेव के नाम कोरियर या पोस्ट द्वारा भेज सकतें है। ❑ इन यात्रियों में प्रत्येक कमरे में दो व्यक्ति ठहरेंगे इस यात्रा में रहने व् खाने की व्यवस्था होगी इस यात्रा में खाना शाकाहारी होगा। ❑ इस यात्रा में रेलवे की बुकिंग कम्प्यूटर द्वारा जो सीट नंबर मिलेगा वही आपका सीट नंबर होगा। ❑ कृपया सभी सीनियर सिटीजन यात्री अपना आयु का प्रमाण पत्र साथ रखे। ❑ इस यात्रा में दोपहर का भोजन कभी कभी संभव नहीं हो पाता उस समय के लिए यात्री अपनी पसंद की खाने पिने की मन पसंद वस्तुएँ अपने पास रखें। ❑ सीट बुक कराने के लिए सभी यात्री 18000/- अग्रिम राशि के रूप में जमा करवा दें इस यात्रा में एक बार टिकट बन जाने पर अगर यात्री टिकट रद्द करवाता है तो 15000/- व जाने से तीन दिन पहले रद्द करवाने पर कुछ भी वापस नहीं मिलेगा क्योंकि होटल व् बस, टिकट बुक हो चुकी होती है।

आर्य ट्रेवल- अमित सचदेवा, मो. 9868095401, **विजय सचदेवा** (सुपुत्र स्व. श्रीश्यामदास सचदेवा)

2613, चुना मंडी, पहाड़गंज, नई दिल्ली-110055, फोन-011-45112521, 9811171166

आप ऋषि जन्मभूमि हेतू दानराशि निम्नलिखित रूप से भेज सकते हैं

दानराशि नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा **''श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा''** के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवा सकते हैं अथवा खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300 में जमा करा सकते हैं। बैंक में जमा की गई दानराशि/तिथि/पते की सूचना एवम् रसीद किस नाम से बनानी हैं मो. 09560688950 पर लिखित सूचना मैसेज/वट्सअप द्वारा देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ–दान : महा–दान

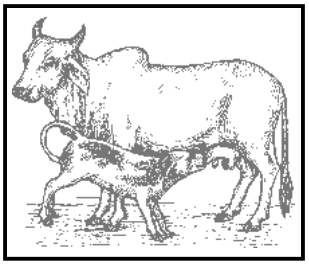

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से **20,000/-** रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा**, के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं
अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 125 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत–प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

–: निवेदक :–

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

आर्य विद्वानों से अनुरोध

प्रतिवर्ष ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित किया जाता है। आगामी **बोधोत्सव 20, 21, 22 फरवरी 2020** को समारोह पूर्वक आयोजित किया जा रहा है और इसी अवसर पर टंकारा समाचार का ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आपसे प्रार्थना है कि आप अपने सारगर्भित अप्रकाशित लेख एवं कविता 10 जनवरी 2020 तक भिजवाकर कृतार्थ करे। लेख वेद, स्वामी दयानन्द, योग, स्वास्थ्य एवम् अन्य उपयोगी प्रेरणादायक विषयों पर ही सीमित हो। ऐसा निर्णय किया है कि प्रकाशनार्थ सामग्री टाईप की हुई दो या तीन पुष्ठों से अधिक न हो तो सुविधाजनक रहेगा। आप प्रकाशनार्थ सामग्री ईमेल **tankarasamachar@gmail.com** या **mayankprinters5@gmail.com** पर ''वॉकमेन चाणक्य'' टाईप में कम्पोज करके भी भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा।

अजय, सम्पादक टंकारा समाचार, चलभाष 9810035658

सम्पादकीय कार्यालय: ए–419, ओ३म् ध्वज सदन, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

આર્યસમાજનું મન્તવ્ય –

"જે વેદાનુકૂળ છે - વેદની વિરુદ્ધ નથી" એને આર્યસમાજ માને છે. માત્ર વેદાનુકૂળ કહેવું પર્યાપ્ત નથી.
(સંદર્ભ : દો અનાદિ સત્તાઓ, પૃ. ૧૦૦ – ૧૦૨, દ્વિતીય આવૃત્તિ ૧૯૯૩, પ્રસ્તુતિ : ભાવેશ મેરજા)

સ્વામી દયાનન્દ સરસ્વતીજીની દૃષ્ટિમાં મુક્તિના સાધન

મુક્તિ કહે છે – છૂટી જવું અર્થાત્ જેટલા દુ:ખ છે એ બધાંમાંથી છૂટીને એક સચ્ચિદાનન્દ સ્વરૂપ પરમેશ્વરને પ્રાપ્ત થઈને સર્વદા આનન્દમાં રહેવું, પછી જન્મ-મરણ આદિ દુ:ખસાગરમાં પાછું ન પડવું. આનું જ નામ **મુક્તિ** છે. એ કઈ રીતે પ્રાપ્ત થાય?

એનું પહેલું સાધન સત્યનું આચરણ છે અને એ સત્યનો આત્મા અને પરમાત્માની સાક્ષીથી નિશ્ચય કરવો જોઈએ અર્થાત્ જેમાં આત્મા અને પરમાત્માની સાક્ષી ન હોય એ અસત્ય છે. જેમકે કોઈએ ચોરી કરી. જ્યારે એ પકડાઈ ગયો ત્યારે સરકારી અમલદારે પુછ્યું કે – તેં ચોરી કરી છે કે નહીં? ત્યારે જવાબમાં એ કહે છે કે – મેં ચોરી નથી કરી. પરન્તુ અંદરથી આત્માનો અવાજ આવે છે કે – મેં ચોરી કરી છે. જ્યારે કોઈ પાપ કરવા જાય છે ત્યારે એના અન્ત:કરણમાં પરમેશ્વર પ્રેરણા આપે છે કે આ ખોટું થાય છે, આમ ન કરવું જોઈએ. એના આત્મામાં લજ્જા, શંકા અને ડર આદિ ઉત્પન્ન થાય છે. પણ જ્યારે એ સત્ય કાર્ય કરવા તરફ આગળ વધે છે ત્યારે એના આત્મામાં આનંદનો આવેગ આવી જાય છે. એને પ્રેરણા થાય છે કે તું આવા જ કામ કર. સત્ય કામ કરતી વખતે નિર્ભય અને પ્રસન્ન બની જાય છે. જ્યારે પરમાત્માની આજ્ઞાનું ઉલ્લંઘન કરીને પાપ કરે છે ત્યારે કોઈ પણ રીતે એને મુક્તિ નથી મળતી. એને જ અસુર, દુષ્ટ અને દૈત્ય કહ્યો છે. વેદમાં પણ કહ્યું છે કે –

અસુર્યા નામ તે લોકા અન્ધેન તમસાવૃતા:
તાંસ્તે પ્રેત્યાપિ ગચ્છન્તિ યે કે ચાત્મહનો જના:॥
(યજુ. ૪૦, ૩૦)

આત્માની હિંસા કરવા વાળા અર્થાત્ જે પરમેશ્વરની આજ્ઞાનું ઉલ્લંઘન કરે છે અને પોતાના આત્મજ્ઞાનથી વિરુદ્ધ બોલે, કરે અને માને છે – એનું જ નામ અસુર, રાક્ષસ, દુષ્ટ, પાપી, નીચે વિગેરે હોય છે.

મુક્તિના સાધન:

૧ સત્ય આચરણ

૨ સત્ય વિદ્યા અર્થાત ઈશ્વરકૃત વેદવિદ્યાને યથાવત ભણીને જ્ઞાનની ઉન્નતિ અને સત્યનું યથાવત પાલન કરવું.

૩ સત્પુરુષ જ્ઞાનિઓનો સંગ કરવો.

૪ યોગાભ્યાસ કરીને પોતાના મન, ઇન્દ્રિઓ અને આત્માને અસત્યાના માર્ગેથી દૂર લઈ જઈને સત્યમાં સ્થિર કરવા અને જ્ઞાનની વૃદ્ધિ કરવી.

૫ પરમેશ્વરની સ્તુતિ કરવી અર્થાત્ એના ગુણોની કથા સાંભળવી અને એના પર વિચાર કરવો.

૬ પ્રાર્થના – જે આ રીતની હોય છે – હે જગદીશ્વર! હે કૃપાનિધે! હે અસ્મત્પિત: ! અમને અસત્યના માર્ગેથી છોડાવીને સત્યના માર્ગે લઈ જાઓ અને હે ભગવન! અમને અન્ધકાર અર્થાત અજ્ઞાન અને અધર્મ આદિ દુષ્કર્મોથી દૂર લઈ જઈને વિદ્યા અને ધર્મ આદિ શ્રેષ્ઠ કર્મોના માર્ગે લઈ જાઓ. અને હે બ્રહ્મ! અમને જન્મજન્માન્તર મરણરૂપ સંસારના દુ:ખોથી છોડાવીને તમારા કૃપાકટાક્ષથી અમૃત અર્થાત મોક્ષને પ્રાપ્ત કરાવો.

જ્યારે સત્ય મનથી પોતાના આત્મા, પ્રાણ અને સર્વ સામર્થ્યથી પરમેશ્વરને જીવ ભજે છે ત્યારે એ કરુણામય પરમેશ્વર એને પોતાના આનન્દમાં સ્થિર કરી દે છે. જેમ જ્યારે કોઈ નાનું બાળક ઘરના ઉપરના માળેથી નીચે માતા-પિતા પાસે આવવા માંગતું હોય કે પછી નીચેથી ઉપર જવા માંગતું હોય ત્યારે હજારો જરૂરી કામ છોડીને પણ માતા-પિતા દોડીને બાળકને પોતાની ગોદમાં ઉઠાવી લે છે કે બાળક ક્યાંક નીચે ન પડી જાય, એને વાગી ન જાય. જેમ માતા-પિતા સદાય પોતાના બાળકને સુખી જોવા ઇચ્છા છે અને તે માટે પુરુષાર્થ પણ કરતા રહે છે એવી જ રીતે પરમ કૃપાળુ પરમાત્માની દિશામાં કોઈ સત્યનિષ્ઠ આત્મા નિષ્કામ ભાવે ચાલી પડે છે ત્યારે એ અનન્તશક્તિરૂપ હાથોથી એ જીવને ઉપાડીને સર્વદા પોતાની ગોદમાં સાચવે છે. પછી એના પર કોઈ જ જાતનું દુ:ખ ન પડે એનું ધ્યાન રાખે છે જેથી એ જીવ સર્વદા આનન્દમાં રહે.

જીવે પણ સર્વદા પક્ષપાતનો ત્યાગ કરીને સત્યને ગ્રહણ અને અસત્યનો પરિત્યાગ કરીને જ અર્થને સિદ્ધ કરવો જોઈએ. બધાં જ અન્યાય અને અધર્મ મોટેભાગે પક્ષપાતને કારણે થતા હોય છે. અધર્મથી કામ સિદ્ધ કરવો એને જ અનર્થ કહ્યો છે. અને ધર્મ અને અર્થથી કામના અર્થાત પોતાના સુખની સિદ્ધિ કરવી એને જ કામ કહ્યો છે. અધર્મ અર્થાત્ અનર્થથી કામની સિદ્ધિ કરવી એને કુકામ કહે છે. એટલે જ આ ત્રણે અર્થાત્ ધર્મ, અર્થ અને કામથી મોક્ષની સિદ્ધિ કરવી જોઈએ. એમાં એવી વાત છે કે ઈશ્વરની આજ્ઞાનું પાલન કરવું એને ધર્મ, અને એની આજ્ઞાનો અનાદર કરવો એને અધર્મ કહ્યો છે. એટલે ધર્મ આદિ જ મુક્તિના સાધન છે બીજા કોઈ જ નથી. મુક્તિ સત્ય પુરુષાર્થથી સિદ્ધ થાય છે. અન્ય માર્ગે નહીં.

(पृष्ठ 01 का शेष)

देखकर नास्तिक गुरुदत्त विद्यार्थी अस्तिक बन गये। उनके सोच विचार बदल गये। उन्होंने अपना पूरा जीवन ऋषि के मिशन को समर्पित कर दिया।

पं. लेखराम ऋषि जी के जीवन और विचारों पर इतने दीवाने हुए कि पूरा जीवन आर्य मुसाफिरों में गुजार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्य जनों को सन्देश दे गये-तकरीह और तहरीर का काम बन्द न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरों में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में सम्भव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि जी के जीवन को अनेक प्रेरक उदाहरण, घटनाएं व बातें है जो आज के जीवन और जगत् को सम्भालने, सुधारने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती है। स्वामी जी का जीवन खुली किताब है। उनकी कथनी और करनी एक थी। उनका जीवन बोलता था, जो कहा उसे कर दिखाया। प्रभु विश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

यह लेख मैंने ऋषि दयानन्द की अमर गाथा ''जिसके लेखक डॉ. महेश विद्यालंकार हैं, उससे उद्ग्रहित किया है। इसमें ऋषि जी का जीवन बहुत उत्तम व प्रेरणा दायक है। सुधिपाठकगण इससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को उत्तम बना सकें, इसी उद्देश्य से यह लेख लिखा है।

- C/o गोविन्द राम आर्य एण्ड सन्स 180, महात्मा गांधी रोड, द्वितीय मंजिल, कलकत्ता-700007, मो. 9830135794, 033-22183825

स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती स्मृति सम्मान

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के तत्वावधान में स्व. स्वामी संकल्पानन्द सरस्वती जी की स्मृति ऐसे संन्यासीवृन्द जिनका अपना कोई मठ नहीं है और वे भारत भर में भ्रमण कर आर्य समाज और वेद का प्रचार करते हैं, को ऋषि जन्मभूमि टंकारा में आयोजित होने वाले ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर 21 फरवरी 2020 को रूपये 25000/- की राशि से सम्मानित किया जायेगा।

आदरणीय संन्यासीवृन्दों से प्रार्थना है कि वे अपने द्वारा किए गए वेद प्रचार का विवरण देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई के पते पर सूचित करने की कृपा करें। प्रतिनिधि सभा द्वारा लिया गया निर्णय सर्वसान्य होगा।

इसी अवसर पर इस वर्ष से किसी एक ऐसे विद्वान जो पूर्ण कालिक वेद एवम् वेदिक मान्याताओं के प्रचार प्रसार में संलग्न है और किसी भी प्रतिनिधि सभा से संबंधित नहीं है। (स्वतन्त्र रूप से सेवाएं दे रहे हैं। ऐसे विद्वानों को टंकारा बोधोत्सव पर सम्मानित किया जाएगा।) कृपया करके विस्तृत जानकारी चित्र सहित निम्न पते पर तुरन्त भेजें।

निवेदक
अरूण अब्रोल, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई, आर्य समाज माटूंगा, मुम्बई

D.A.V. PUBLIC SCHOOL, SECTOR-14, FARIDABAD SPIC-MACAY : GOTIPUA DANCE

A basic framework of cultural and festive celebration of Orissa, revolving around Lord Jagannath, was depicted through a mesmerizing dance drama by the artists of Orissa Dance Academy, under the aegis of **Spic Macay, at D.A.V. Public School, Sector-14, Faridabad on 26th November 2019**. The Gotipua dance training is imparted by Guru Laxmi Dhar Swain, a noted Gotipua teacher, and other senior teachers who were Gotipua Dancers in their formative years and in direct supervision of Guru Smt. Arun Mohanty, Padmashree Awardee. The Programme began with Lamp Lighting by the guest artists and the Principal Mrs. Anita Gautam. The guests were accorded warm floral welcome by her. Gotipua, is a traditional dance form of Orissa, in which young boys dress-up as girls and dance aesthetically to praise Lord Jagannath. The dancers of the academy presented expressional dance through hand gestures and facial expressions, depicting their emotions. They also struck many acrobatic postures. The Principal, Mrs. A. Gautam, in her speech thanked the dancers for giving a mesmerizing performance. She also applauded the academy for making students more aware about rich Indian heritage. It was truly an informative and a delightful session for the students.

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

शिवराजवती आर्या (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

महात्मा आनन्द स्वामी जी की स्मृति में आनन्दोत्सव सम्पन्न

उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते पदमश्री डॉ. पूनम सरी जी

आर्य समाज वसंत विहार, दिल्ली और सूरज भान डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल वसंत विहार में महात्मा आनन्द स्वामी जी की स्मृति में आनन्दोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 5 दिसम्बर से 7 दिसम्बर 2019 तक विभिन्न विद्यालयों के छात्र-छात्राओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। सर्वप्रथम हवन में आर्य समाज वसंत विहार के सदस्य, विभिन्न स्कूलों से आए हुए प्रतिभागी तथा अन्य गणमान्य अतिथि सम्मिलित हुए। अंतर विद्यालय प्रतियोगिता में दिल्ली एवं एन.सी.आर.के. विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। 7 दिसम्बर को आर्य समाज वसंत विहार में पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में, श्री सत्यपाल आर्य जी, श्री अजय सहगल जी सम्पादक टंकारा समाचार तथा श्री आर.एस. शर्मा जी ने अपने प्रेरक वचनों के द्वारा सभा में उपस्थित महानुभाव का भी मार्गदर्शन किया। कहते है-जहाँ चाह वहां राह अपने व्यस्त एवं बहुमूल्य समय में से कुछ समय निकलकर हमारे पदम्श्री अलंकृत आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी ने समारोह में उपस्थित होकर हमारा उत्साहवर्धन किया। प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र एवं ट्राफी देकर सम्मानित किया गया। इस आनन्द उत्सव की शोभा का एक आकर्षक पहलू तब और उत्साह वर्धक हो गया जब विद्यालय की प्रधानाचार्या जी को डॉक्टर की उपाधि मिलने पर डी.ए.वी. के प्रधान जी ने शाल भेंट देकर सम्मानित किया। सूरज भान डी.ए.वी. स्कूल की प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता आहूजा के कुशल निर्देशन में यह तीन दिवसीय आनंदोत्सव सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. दिल्ली में चरित्र निर्माण शिविर आयोजित

आर्य युवा समाज के सौजन्य से, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, कैलाश हिल्स, दिल्ली में दो दिवसीय 'चरित्र निर्माण शिविर' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में दिल्ली तथा एन.सी.आर. के बारह (12) विद्यालयों ने बड़े ही उत्साह से भाग लिया। इस कार्यक्रम में 120 विद्यार्थी तथा 16 धर्म शिक्षक शामिल हुए। शिविर का आरंभ हवन से हुआ। विद्यालय की आठवीं कक्षा की छात्रा श्रुति ने चरित्र निर्माण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुए विषय से अवगत करवाया। इस शिविर में अनेकानेक गतिविधियाँ आयोजित की गई। जैसे-वैदिक हवन, वैदिक परिचर्चा, ध्यान, योग, प्राणायाम, वाद-विवाद (दंड और क्षमा) कुश्ती, जूडो, कराटे, आत्मरक्षा संबंधी गतिविधियाँ, स्काउड-गाइड द्वारा आपातकालीन स्थितियों में सुरक्षा तथा सहयोग की भावना विकसित करने संबंधी क्रियाकलाप आदि आयोजित हुए। 16 धर्म शिक्षकों द्वारा (दंड और क्षमा) विषय पर वाद-विवाद हुआ। जिसकी अध्यक्षता, **आर्य युवा समाज दिल्ली की प्रधाना तथा डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैलाश हिल्स की प्रधानाचार्या श्रीमती इरा खन्ना जी** कर रही थीं। इस कार्यक्रम में छात्रों को दंड और क्षमा का विषय उसी समय दिया गया था। छात्रों ने बड़े ही उत्साह से विद्यालय में तथा घर में घटित होने वाली घटनाओं को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए। क्षमा और दंड से हर बच्चे ने अपनी परिस्थिति के अनुसार अपनी व्यक्तिगत भावनाओं का वर्णन किया। धर्म शिक्षकों को व्याख्यान हेतु उसी समय दिए गए विषय, जिन पर धर्म शिक्षकों ने विषयानुसार चरित्र को उज्जवल बनाने हेतु प्रकाश डाला। धर्म शिक्षकों को व्याख्यान हेतु दिए गए विषय- 1.अभिवादन के लाभ, 2. आत्मचिंतन, 3. प्रातः जागरण के लाभ, 4. दया, 5. मधुर वाणी, 6. शांति, 7. सहनशीलता, 8. सदाचार, 9.क्षमा, 10.उत्साह।

इस कार्यक्रम में उपस्थित टंकारा ट्रस्ट के संचालक श्री अजय सहगल जी ने कछुए और खरगोश की कहानी तथा 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' सूक्ति के माध्यम से साथ मिलकर चलने की प्रेरणा दी। इसके साथ-साथ, क्या ईश्वर दंड देते हैं? इस प्रश्न का उत्तर भी अत्यंत सरल शब्दों में स्पष्ट किया। कार्यक्रम में उपस्थित ब्रिगेडियर अशोक अदलक्खा जी ने बच्चों में राष्ट्रप्रेम की भावना को जागृत कर उन्हें सन्मार्ग में चलने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में उपस्थित डी.ए.वी. के उप-प्रधान तथा विद्यालय के चेयरमैन डॉ. एस.एस. खन्ना जी ने गीता के श्लोकों के माध्यम से छात्रों को चरित्र निर्माण का पाठ पढ़ाया। अन्ततः संस्कृत अध्यापिका सुनीता शर्मा जी ने शिविर में उपस्थित मुख्य अतिथियों का आभार प्रकट किया।

टंकारा समाचार जनवरी 2020
Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2018-19-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं0 U(C) 231/2018-20
Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-01-2020
R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.12.2019

स्नेह एक ऐसा अनुभव है
जो मनुष्य को कभी हारने नहीं देता
और घृणा एक ऐसा अनुभव है
जो इंसान को कभी जीतने नहीं देता।

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता की अपील

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 20, 21, 22 फरवरी 2020 (वीरवार, शुक्रवार, शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है। आपसे प्रार्थना है कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने की कृपा करें।

सामवेद पारायण यज्ञ: 15 फरवरी से 21 फरवरी 2020 तक

ब्रह्मा: आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत: श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) डॉ सुकृति माथुर व श्री अविरल माथुर (दिल्ली)

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष:

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति/आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् ट्रस्टी महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट, टंकारा)

बोधोत्सव

दिनांक 21.02.2020

विशेष श्रद्धांजलि सभा

मुख्य अतिथि: **महामहिम आचार्य देवव्रत जी**, राज्यपाल गुजरात सरकार

विशिष्ट अतिथि: **पद्मभूषण महाशय धर्मपाल**, एम.डी.एच. (प्रतिष्ठित उद्योगपति)

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

अध्यक्षता: **श्री सुरेश चन्द्र आर्य**, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

कार्यक्रम के आमन्त्रित महानुभाव: **स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक सरस्वती** (रोजड़), **स्वामी आर्येशानन्द** (माउन्ट आबू), **स्वामी शान्तानन्द** (गुजरात), **स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती** (यमुनानगर), **साध्वी उत्तमायती** (अजमेर), **डॉ. विनय विद्यालंकार** (उत्तराखण्ड), **डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार** (ओ.एस.डी. राज्यपाल गुजरात), **श्री मिठाई लाल सिंह** (प्रधान मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा), **श्री विनय आर्य** (मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), **गिरीश खोसला** (वेद पथिक अमेरिका), **भावेश खोसला** (मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका), **अशोक सहगल** (अखिल भारतीय हिन्दु शुद्धि सभा), **श्री मोहन भाई कुण्डारिया** (स्थानीय सांसद), **श्री बल्लभभाई कथीरिया** (राजकोट) एवम् इसके अतिरिक्त देश विदेश से अनेकों विद्वान एवं संन्यासी महानुभाव उपस्थित रहेंगे।

दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि टंकारा में चल रहे कार्यो के लिए एवं ऋषि लंगर हेतु अधिकाधिक आर्थिक सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। यह दान नकद/चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा "श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा" के नाम दिल्ली कार्यालय आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 अथवा श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा जिला-मौरबी-363650 (गुजरात) के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। आप सहयोग राशि **खाता न. 4665000100001067, पंजाब नैशनल बैंक, संसद मार्ग, नई दिल्ली, IFSC CODE PUNB0015300** में जमा करा सकते हैं। जमा की गई सहयोग राशि, तिथि एवम् पते की सूचना मो. 09560688950 पर देवें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि धारा 80 जी के अन्तर्गत आयकर से मुक्त है।

निवेदक **शिवराजवती आर्या**, उपप्रधाना **रामनाथ सहगल**, मन्त्री

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय